मौर्य कालीन कला का उद्भव एवं विकास:

RACHANA RANI

Dr. Om Prakash Singh **M.A, Bed, NET (Roll N0. UP 01000303)**

Assistant Professor, Deptt of History

Constituent Government College, Thakurdwara, Moradabad (U.P).India.

सार:– प्राचीन भारत में कला की परंम्परा अत्यंत प्राचीन है, हड़प्पा सभ्यता की कला विश्व प्रसिद्ध है। कला की दृष्टि से हड़प्पा की सभ्यता और मौर्यकाल के बीच लगभग 1500 वर्ष का अंतराल है। इस बीच की कला के भौतिक अवशेष उपलब्ध नहीं है। महाकाव्यों और बौद्ध ग्रंथों में हाथीदाँत, मिट्टी और धातुओं के काम का उल्लेख है। किन्तु मौर्यकाल से पूर्व वास्तुकला और मूर्तिकला के उदाहरण कम ही मिलते हैं। मौर्यकाल में ही पहले–पहल कलात्मक गतिविधियों का इतिहास निश्चित रूप से प्रारम्भ होता है। राज्य की समृद्धि और मौर्य शासकों की प्रेरणा से कलाकृतियों को प्रोत्साहन मिला। उसके पश्चात लगातार उसका विस्तार होता गया।

मुख्य शब्द:– राजप्रसाद, स्तम्भ,स्तूप, वास्तुकला,चैत्यागृह,एकाश्म पत्थर, गुहा विहार, धर्म–चक्र–प्रवर्तन, मेधि, वेदिका, प्रदक्षिणापथ, हर्मिका,यष्टि, क्षत्र, तोरण ।

भूमिका:––– कला किसी भी काल की मानवीय कल्पनाओं के मूर्त रूप को प्रदर्शित करती है। भारतीय इतिहास में कला परम्परा का विकास सिन्धु सभ्यता से ही प्रारम्भ हुआ परंतु स्थाई एवं निरंतर कला परम्परा का विकास मौर्य काल से ही माना जाता है। क्योंकि मौर्य काल से पूर्व लकड़ी एवं मिट्टी के कला रूपो का विकास हुआ जिसमे निरंतरता का अभाव रहा।

मौर्य कला शैली जहां स्थानीय एवं भारतीय परम्परा शैली तथा विदेशी ईरानी शैली को सम्मिश्रित रूप में प्रदर्शित करती है जबकि इस पर कहां तक ईरानी प्रभाव है यह एक विमर्श का विषय है। कला समीक्षकों के अनुसार मौर्य काल मे समृद्ध राजनीतिक स्थिति में कला के विविध रूपो का विकास हुआ। राजकीय संरक्षण में जहां स्थापत्यकला को प्रधानता दी गयी जैसे मौर्य प्रसाद, अशोक स्तम्भ, गुहा विहारों एवं स्तूप। वही स्थानीय लोक कला में मूर्तिकला का अभूतपूर्व विकास हुआ। जिसमें स्वतंत्र कलाकारों द्वारा लोक–रुचि की वस्तुओ का निर्माण किया गया जैसे यक्ष–यक्षणी की प्रतिमाएं, मिट्टी की मूर्तियां आदि। राजकीय कला की प्रेरणा का स्रोत स्वयं सम्राट था। जबकि लोक कला के रूपो की परम्परा युगों पूर्व से काष्ठ एवं मिट्टी में चली आई थी, जिसे अब पाषाण के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया।

(A)* स्थापत्य कला:––– शक्तिशाली केन्द्रीय शासन व्यवस्था के दौरान स्थापत्य कला के विभिन्न रूपो का अभूतपूर्ववि कास हुआ जिनका वर्णन इस प्रकार से है–––

(1)* राज प्रसाद राजकीय कला का सबसे पहला उदाहरण चन्द्रगुप्त मौर्य का राजप्रसाद है। यह प्रसाद वर्तमान में पटना के निकट 'कम्रहार' के समीप था, जिन्हें प्रकाश में लाने का श्रेय स्नूकर महोदय को है। बुलन्दीबाग से नगर के परकोटे के अवशेष मिले हैं जिसकी लम्बाई 450 फुट तक

हैं। इसमें दोनों ओर लकड़ी के लट्ठों की विशाल दीवारें हैं। प्रत्येक लट्ठा 19 फुट ऊँचा और एक फुट चौड़ा हैं। लट्ठों की दोनों दीवारों को 14 फुट के बड़े लट्ठों से जोड़ा गया हैं। उनके बीचो बीच कुटी हुई मिट्टी भरी गई हैं। कुम्रहार के राजप्रसाद से पता चलता हैं कि यह एक भवन समूह था। एक भवन के अवशेष में पत्थर के विशाल स्तम्भ खड़े हैं जो किसी विशाल स्तंभ-मण्डप की छत के आधार रहे होंगे। यही संभवतः चन्द्रगुप्त मौर्य का विशाल सभाभवन था। यह ऐतिहासिक काल का पहला विशाल अवशेष है जो एक मण्डप के रूप में हैं। मण्डप के मुख्य भाग में दस-दस स्तंभों की आठ कतारे पूरब से पश्चिम की ओर बानी हैं और मण्डप के एक ओर काष्टमंच भी मिले हैं, जिन्हें काष्ठशिल्प का अदभुत उदाहरण माना जा सकता हैं। खुदाई मे अशोक के स्तम्भ से मिलता-जुलता एक स्तम्भ का निचला भाग पूर्ण अवस्था मे प्राप्त हुआ हैं। यह राजप्रासाद चौथी सदी ई0 में ज्यो-का-त्यों विद्यमान था और चीनी यात्री फाहियान तो इसे देखकर अचंभित हुआ था तथा उसने अत्यंत भाव भरे शब्दो मे इस राज प्रसाद की प्रसंशा की है कि-- **"यह राज प्रसाद मानव कृति नही है वरन देवो (देवताओ) द्वारा निर्मित है।"** यूनानी यात्री एरियन ने इसकी भव्यता का वर्णन करते हुए कहा है कि राज प्रसाद की शान-शौकत का मुकाबला न तो सूसा और न एकबतना (मध्य एशिया के राज प्रसाद) ही कर सकते है। मेगस्थनीज ने पाटलिपुत्र नगर की विशेषताओं का वर्णन किया है। इस प्रकार मौर्य युग मे काष्ठ कला अपने विकास की पराकाष्ठा पर पहुँच गयी थी। यह राज प्रसाद अपनी भव्यता के लिए प्रसिद्ध था। 80 स्तम्भो वाला सभा-भवन लकड़ी के फर्श एवं छत, 140 फीट लम्बा, 120 फीट चौड़ा था जो राज प्रसाद की मुख्य विशेषता है।

मेगस्थनीज के अनुसार, "पाटलिपुत्र सोन और गंगा के संगम पर बसा हुआ था। नगर की लंबाई 9 1/2 मील और चौड़ाई 1 1/2 मील थी। नगर के चारो ओर लकड़ी की दीवार बनी हुई थी जिसके बीच-बीच मे तीर चलाने के लिए छेद बने हुए थे। दीवार के चारो और एक खाई थी जो 60 फुट गहरी और 600 फुट चौड़ी थी। नगर में आने जाने के लिए 64 द्वार थे। दीवार में बहुत से बुर्ज थे जिनकी संख्या 570 थी।"

(2)* स्तम्भ:- मौर्य काल के सर्वोत्कृष्ट नमूने अशोक के एकाश्मक स्तम्भ है। स्तम्भ कला परम्परा का विकास भारत मे इसी युग मे ही हुआ। अशोक ने इसका निर्माण मुख्यतः धर्म के प्रचार के लिए करवाया और भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में स्थापित करवाया। वर्तमान में 15 स्तम्भ सुरक्षित अवस्था मे है, यधपि इनकी संख्या कुछ ज्यादा ही रही होगी। ये चुनार के बलुआ पत्थर के बने हुए हैं। लाट की ऊंचाई 40 से 50 फुट हैं तथा वजन लगभग 50 टन हैं। चुनार की खानों से पत्थरो को काटकर निकालना, शिल्पकला में इन एकाश्मक खंभो को काट-तराशकर वर्तमान शक्ल देना तथा इन स्तम्भो को देश के विभिन्न अंचलो में पहुंचाना निसन्देह शिल्पकला एवं इंजीनियरिंग कौशल का अदभुत उदाहरण हैं। इन स्तम्भो के दो भाग उल्लेखनीय हैं- स्तम्भ यष्टि या गावदुम लाट (Tepering shaft) और शीर्ष भाग। शीर्ष भाग के मुख्य अंश हैं, घंटा जो कि अखमनी स्तम्भो के आधार के घंटो से मिलते जुलते हैं। भारतीय परम्परा के

पोषक विद्वान इसे आवांगमुखी कमल (Inverten Lotus) कहते हैं। इसके ऊपर गोल अंड या चौकी हैं। कुछ चौकियों पर 4 पशु और 4 छोटे चक्र अंकित हैं। सारनाथ स्तम्भ शीर्ष की चौकी पर है। चौकी पर सिंह, अश्व, हाथी तथा बैल आसीन हैं। रामपुरवा का नटुवा बैल ललित मुद्रा में खड़ा है। सारनाथ के शीर्ष स्तम्भ पर चार सिंह पीठ सटाए बैठे हैं। ये सिंह एक चक्र धारण किये हुए हैं। यह चक्र बुद्ध द्वारा धर्म-चक्र-प्रवर्तन का प्रतीक हैं। अशोक के एकाश्मक स्तम्भो का सर्वोत्कृष्ट नमूना सारनाथ के सिंह स्तम्भ का शीर्ष हैं। मौर्य शिल्पियों के रूपविधान का इससे अच्छा कोई दूसरा नमूना नही हैं। ऊपरी सिंहो में जैसी शक्ति का प्रदर्शन हैं, उनकी फूली नसों में जैसी स्वाभाविकता हैं और इनके नीचे उकेरी आकृतियों में जो प्राणवान वास्तविकता हैं, उसमे कही भी आरम्भिक कला की छाया नही हैं। शिल्पी ने सिंहो के रूप को प्राकृतिक सच्चाई से प्रकट किया हैं। सिंहो के मस्तक पर महाधर्मचक्र स्थापित था जिसमे मूलतः 32 तीलिया थी। यह शक्ति के ऊपर धर्म की विजय का प्रतीक हैं जो बुद्ध तथा अशोक दोनों के व्यक्तित्व में दिखाई देता हैं।

स्तम्भो की विशेषता --- सारनाथ स्तम्भ की, चमकीली पॉलिश, घंटा-कृति तथा शीर्ष भाग में पशु आकृति के कारण पाश्चात्य विद्वानों-- जॉन मार्शल,पर्सी ब्राउन, स्ट्रेला कैम्रिश आदि- ने यह मत किया है कि मौर्य कला को प्रेरणा अखमनी ईरान से मिली हैं। चौकी पर हंसो की उकेरी हुई आकृतियों और अन्य सज्जाओ में यूनानी प्रभाव भी दिखाई देता हैं।

भारतीय विद्वानों के अनुसार अशोक स्तम्भ की कला का स्रोत भारतीय हैं। मौर्य स्तम्भ-शीर्षो की पशुमूर्तियाँ, सारनाथ का सिंह-स्तम्भ, रामपुरवा का बैल प्राचीन सिंधु घाटी से प्रवाहमान परम्परा के अनुकूल हैं। रामपुरवा का बैल मोहनजोदड़ो की मुहरों पर उकेरे हुए बैलो सा लगता हैं। किंतु वासुदेव शरण अग्रवाल ने महाभारत तथा आपस्तम्भ सूत्र से प्रमाण प्रस्तुत किए हैं जिनसे सिद्ध होता है कि चमकीली पॉलिश उत्पन्न करने की कला ईरान से कही पहले भारत मे ज्ञात थीं। मौर्यकाल से पूर्व और एक हद तक मौर्यकालीन स्थानों से जो काली पॉलिश वाले मृतभाण्ड पाए गए है उनसे प्रतीत होता है कि देश के इतिहास में एक युग ऐसा था जब ओपदार चमक में रूचि ली जाती थी। यह भी सिद्ध होता हैं कि इस पॉलिश का रहस्य केवल राजशिल्पियों तक सीमित नही था। पिपरहवा स्तूप से मिली स्फटिक मंजूषा, पाटलिपुत्र के दो यक्ष और दीदारगंज की यक्षिणी में भी यह पॉलिश पाई जाती है। सारनाथ के धर्मचक्र की कल्पना नितांत भारतीय हैं।

ईरानी स्तम्भो और मौर्य स्तम्भो में स्पष्ट भेद हैं। स्वतंत्र स्तम्भो की कल्पना भारतीय हैं। ईरानी स्तम्भ नालीदार हैं जबकि भारतीय स्तम्भ सपाट। ईरानी स्तम्भ अलग-अलग पाषाण खंडों के बने है किन्तु अशोक स्तम्भ एक ही पत्थर के है। स्तम्भ के शीर्ष भाग को घंटा कहा गया है किन्तु भारतीय विद्वानों के अनुसार वह आवांगमुखी कमल अथवा पूर्णघाट है जो बहार की ओर लहराती हुई कमल की पंखुड़ियों से ढका हुआ है। इसके अलावा ईरानी और मौर्य स्तम्भो शीर्षो के अलंकरणों में भी अन्तर है। मौर्य शिल्पियों ने चिरपरिचित परम्परा को अपनाया और अपनी प्रतिभा से उसे नवीन आकार दिया।

(3)* स्तूप:-- स्तूप कला का निर्माण मौर्य काल से पहले से चला आ रहा था पर

इसे व्यवस्थित संरचनात्मक रूप मौर्य काल के दौरान ही प्राप्त हुआ। स्तूप वास्तव में बौद्ध धर्म से जुड़ा एक धार्मिक स्थल है। हालांकि इसकी प्रमाणिकता संदिग्ध है। यधपि स्तूप निर्माण की प्रथा बुद्धकाल से भी पहले की है और स्तूप का पहले पहल उल्लेख ऋग्वेद से प्राप्त होता है जहाँ अग्नि की उठती हुई ज्वालाओं को स्तूप कहा गया हैं। महात्मा बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद उनकी अस्थियों को 8 भागो में विभाजित कर उन पर समाधियों का निर्माण किया गया। सामान्यतः इन्ही को स्तूप कहा जाता है। 'स्तूप का शाब्दिक अर्थ है- 'ढेर' या 'थूठा'। चूँकि यह चिता के स्थान पर बनाया जाता था अतः इसका एक नाम 'चैत्य' भी हो गया। मेधि, वेदिका, प्रदक्षिणापथ, हर्मिका,यष्टि, क्षत्र, तोरण आदि स्तूप वास्तु के प्रमुख अंग है।

बौद्ध परम्परा अशोक को 84000 स्तूपों के निर्माण का श्रेय प्रदान करती है। यधपि यह संख्या कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण प्रतीत होती हैं तथापि सातवी सदी में भारत आने वाले चीनी यात्री ह्वेनसांग ने तक्षशिला, श्रीनगर, थानेश्वर, मथुरा, कन्नौज, प्रयाग, कौशाम्बी, श्रावस्ती, सारनाथ, वैशाली,गया, कपिलवस्तु आदि स्थानों में इन स्तूपों को देखा था। परन्तु दुर्भाग्यवश आज ये सभी नष्ट हो चुके हैं। सांची तथा भरहुत के स्तूपों का निर्माण मूल रूप में अशोक ने ही करवाया था। इसके अतिरिक्त सारनाथ तथा तक्षशिला स्थित 'धर्मराजिका स्तूप' का निर्माण भी मूलतः अशोक के समय मे ही हुआ था। शुंगों के समय मे सांची स्तूप का विस्तार हुआ। मौर्यकालीन स्तूप ईंटो के बने थे।

(4)* वास्तुकला:-- अशोक ने वास्तुकला के इतिहास में एक नई शैली का प्रारम्भ किया अर्थात चट्टानों को कटवाकर कंदराओं का निर्माण करवाया। गया के निकट बराबर की पहाड़ियों में अपने राज्याभिषेक के 12 वे वर्ष में सुदामा गुहा तथा 19 वे वर्ष में कर्ण चौपण गुहा आजीवक भिक्षुओ को दान दी। सुदामा गुहा में दो कोष्ठ है। एक गोल व्यास का है जिसकी छत अर्द्धवृत्त या खरबूजिया आकार की है। उसके बाहर का मुखमंडप आयताकार है किन्तु छत गोलाकार है। दोनों कोष्ठों की भित्तियों और छतों पर शीशे जैसी चमकती पॉलिश है। इससे ज्ञात होता है कि चैत्य घर का मौलिक विकास अशोक के समय मे ही आरम्भ हो गया था। और इस शैली का मूल विकास महाराष्ट्र के भाजा, कन्हेरी औए कार्ले चैत्यागृहों में परिलक्षित होता है। अशोक के पौत्र दशरथ ने नागार्जुनी पहाड़ियों में आजीविकों को तीन गुफाएं प्रदान की--- लोमेश ऋषि नामक गुफा जो दशरथ के समय की है, वास्तु विन्यास की दृष्टि से सुदामा गुफा के ही समान है। अन्तर केवल यही है कि इसका आन्तरिक कोष्ठ वर्गाकार न होकर अण्डाकार है। बराबर पहाड़ी की चौथी गुफा को 'विश्व झोपड़ी' कहा जाता है। जिसका निर्माण अशोक के शासनकाल में हुआ था। इसमें दो कोष्ठ है तथा दीवारों पर चमकीली पॉलिश मिलती हैं।

नागार्जुन समूह में 'गोपिका गुफा' महत्वपूर्ण है। इसका विन्यास सुरंग जैसा है। इसके मध्य में ढोलाकार छत और दोनों सिरों पर दो गोल मण्डप है,जिसमे एक को गर्भगृह और दूसरे को मुखमंडप माना जाता है। इसमें मौर्यकालीन गुहा-स्थापत्य की सभी विशेषताएं प्राप्त होती है।

मूर्तिकला:--- मौर्य काल के दौरान मूर्तिकला के रूप में भी कला का अभूतपूर्व विकास हुआ। इस काल मे विकसित मूर्तिकला को दो वर्गों में विभाजित करके देखा जा सकता है----

(i)* स्तम्भ के ऊपर:---- स्तम्भ के ऊपर मूर्तिकला कला का विकास राजकीय संरक्षण में हुआ। इसमें मुख्यतः पशुओं की आकृति की प्रधानता दी गयी हैं। सिंह, हाथी, बैल आदि प्रमुख थे। इसमे सबसे प्रसिद्ध शेर की आकृति है, जो सारनाथ स्तम्भ से प्राप्त हुई है। चार शेरो की ये कलात्मक मूर्ति, कला के अदभुद रूप को प्रदर्शित करती है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता ये है कि स्वतंत्रता के उपरांत इस शेर की आकृति को भारत ने राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में अपना लिया तथा इसके नीचे अंकित 24 तीलियों वाले चक्र को राष्ट्रीय ध्वज के मध्य में अंकित किया गया है। प्रमुख स्तम्भ जहां ये पशु आकृतियां मिली है-- सिंह (ओरियानंदगढ़ सारनाथ), बैल (लैरिया अरेराज- रामपुरवा), हाथी (संकीशा)

(ii)* स्वतंत्र रूप से विकसित मूर्तिकला:---- केन्द्रीय संरक्षण के अतिरिक्त मौर्य काल मे स्थानीय स्तर पर भी मूर्तिकला का अभूतपूर्व विकास हुआ। स्थानीय स्तर पर निर्मित यक्ष-यक्षणियो की मूर्ति लोक प्रतीकों का सूचक थी, जो आगे चलकर देवी-देवताओं के रूप में प्रचलित हुई। कलात्मक रूप से निर्मित ये मूर्तियां अपने आप मे जीवंत प्रतीत होती है। इन पर की गई चमकदार पॉलिश इन्हें और सुंदर रूप प्रदान करती है। इनके प्रमुख साक्ष्यों को निम्नलिखित रूप में देख सकते है---

* दीदार गंज (पटना)---- यक्षिणी की मूर्ति।
* बुलंदीबाग (पटना) ---- नारी एवं बालक की मूर्ति।
* लोहानीपुर (पटना) ----- जैन तीर्थंकर की मूर्ति।
* परखम (मथुरा) ----- यक्ष की मूर्ति।
* धौली (ओडिसा) ---- हाथी की मूर्ति।

(iii)* अन्य--- स्थापत्य एवं मूर्ति के अतिरिक्त स्थानीय स्तर पर कला के अन्य रूपो का भी विकास हुआ। मौर्य काल के दौरान निर्मित मृदभांड के कई अवशेष बिहार एवं भारत के अन्य भागो से प्राप्त हुए है। इसके अतिरिक्त स्थानीय स्तर पर निर्मित घेरेदार कुँए भी कला के विशेष रूप को प्रदर्शित करते हैं।

**** मौर्य कला:---**

* राज प्रसाद में लकड़ी एवं पत्थर का प्रयोग किया गया था।
* स्तम्भ एकाश्म पत्थर से निर्मित था।
* स्तम्भ सपाट एवं चिकने थे।
* स्तम्भ के ऊपर पशु आकृति को उकेरा गया था।
* स्तम्भ के नीचे चौकीदार आधार का अभाव है।

**** ईरानी कला:---**

* मुख्यतः पत्थर का प्रयोग किया गया था।
* स्तम्भ कई पत्थरो को जोड़कर बनाया गया था।
* स्तम्भ दरारी था।
* स्तम्भ के ऊपर उल्टी घंटी का चित्र बना था। स्तम्भ के नीचे चौकी का आधार है।

**** निष्कर्ष:---** मौर्य काल भारतीय इतिहास में राजनैनिक एकीकरण के दौर का प्रारंभिक बिन्दू माना जाता है, ठीक उसी प्रकार मौर्य काल मे विकसित मौर्य कला, भारतीय कला परम्परा का प्रस्थान बिन्दू माना जाता हैं। इस तरह कला एवं स्थापत्य के क्षेत्र में मौर्य युग मे ही सुसंगति

क्रिया कलाप के दर्शन होते हैं। कला के विभिन्न क्षेत्रों में जो गौरवशाली एवं अधुनातन प्रवृत्तियों की नींव डाली गई, वह बाद के वर्षों में कलात्मक सौन्दर्य के लिए प्रेरणादायीं सिद्ध हुई। इस काल के दौरान विकसित कला परम्परा आज भी कला प्रेमियों के मध्य प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:-

***1- थापर,रोमिला, अशोका एंड दि डिक्लाइन ऑफ़ दि मौर्याज़, ऑक्स्फ़र्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,1960.**

***2- मुखर्जी,राधाकुमुद, प्राचीन भारत, राजकमल प्रकाशन, 2015.**

***3- थापर,रोमिला, भारत का इतिहास (1000 ईसापूर्व 1526 ईसवी). राजकमल प्रकाशन.2008**

***4- कुमार लाल,दिलीप, बृहत्तर भारत का निर्माता चंद्रगुप्त मौर्य, प्रभात प्रकाशन, 2006.**

***5- शर्मा, रामशरण, प्रारंभिक भारत का परिचय, ओरियंट ब्लैकस्वान, 2003, 1952.**

***6- रामविलास शर्मा, चंद्रगुप्त मौर्य और उसका काल. राजकमल प्रकाशन प्रा. लि, 2008.**

***7- सेंगर,शैलेंद्र, प्राचीन भारत का इतिहास , अटलांटिक प्बलिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2005.**

***8- प्रसाद, ओम प्रकाश, प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास,राजकमल प्रकाशन, 2006.**

***9-कोसंबी, दामोदर धर्मानंद, प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता, राजकमल प्रकाशन प्रा॰ लि॰, 2009.**

***10- रेड्डी, किट्टू, भारत का इतिहास: एक नवीन दृष्टिकोण. ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, 2008.**

***11- झा, द्विजेंद्र नारायण एवं श्रीमाली कृष्ण मोहन, प्राचीन भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, 1998.**

***12- श्रीवास्तव, डॉ कृष्ण चन्द्र, प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो, 21 यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद, 2000-2001.**